ੴ

सिख गुरुओं की कहानियाँ

जीवनी और गौरव-गाथा

रवि संगम

इक्क ओंकार सत नाम
करता पुरख
निरभऊ निरबैर
अकाल मूरत
अजूनी सैभं
गुर प्रसाद॥

हिन्दुओं में सिख-पंथ की परम्परा निर्गुण भक्ति शाखा से सम्बन्धित रही है। इसमें दस मानव गुरु रहे हैं तथा 11वें गुरु के रूप में आदिग्रन्थ को सम्मान दिया गया है। यह पूरी उदात्त परम्परा विदेशी आक्रमण के कारण मानवता तथा धर्म पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध लड़ने के लिए समर्पित रही है। इस पंथ के गुरुओं ने किस प्रकार अपना बलिदान देकर समाज की रक्षा की इसका पूरा विवरण इस पुस्तक में एक जगह पर दिया गया है। पूरी पुस्तक कहानियों की शैली में लिखी गयी है, जो विशेष रूप से किशोरों के लिए पढने और समझने लायक है।

सिख गुरुओं की कहानियाँ

जीवनी और गौरव-गाथा

बच्चों और किशारों के लिए
विशेष रूप से तैयार की गयी पुस्तक

लेखक

रवि संगम

सिख गुरुओं की कहानियाँ

लेखक- रवि संगम

द्वारा संजया सिंह, अकबर कोठी,
आर. के. एम. लेन,
नाला रोड, पटना जी.पी.ओ.,
पटना, बिहार- 800001

Edition : 2020

(C) All right reserved:
All rights for reproduction of this book are reserved by copyright owner. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form either electronic or mechanical without prior written permission from the copyright owner.

Author
Ravi Sangam

Special thanks to :

- **Bhavanath Jha**,
  Researcher, writer
  Publication Consult
- **Subodh Kumar Singh,**
  Administrative Service, Bihar
- **Ashok Priyadarshi**, Journalist
- **Sanjaya Singh**, Educationist.
- **Priti Sinha**, Educationist.
- **Prasant Kr. Jain**, Computer Engineer

Price 100.00

क्र. सं.	गुरु के नाम	जन्म (प्रकाश)
1.	गुरु नानक देव	15 अप्रैल 1469 ई.
2.	गुरु अंगद	31 मार्च 1504 ई.
3.	गुरु अमरदास	05 मई 1479 ई.
4.	गुरु रामदास	09 अक्टुबर 1534 ई.
5.	गुरु अर्जन देव	15 अप्रैल 1563 ई.
6.	गुरु हरगोविंद	19 जून 1595 ई.
7.	गुरु हर राय	16 जनवरी 1630 ई.
8.	गुरु हरकृष्ण	23 जुलाई 1656 ई.
9.	गुरु तेगबहादुर	01 अप्रैल 1621 ई.
10.	गुरु गोविंद सिंह	22 दिसंबर 1666 ई.
11.	गुरु ग्रंथ साहिब	01 सितंबर 1604 ई.

आदिग्रन्थ का वह अंश जिसपर मूलमंत्र लिखा हुआ है।

इक्क ओंकार सत नाम

करता पुरख

निरभऊ निरबैर

अकाल मूरत

अजूनी सैभं

गुर प्रसाद॥

क्र.सं.	गुरु के नाम	जन्म (प्रकाश)	गुरु गद्दी पर आसीन	गुरु गद्दी पर इस उम्र में आसीन हुए	मृत्यु (दिव्य ज्योति में विलिन)	कुल वर्ष जीवित
1	गुरु नानक देव	15 अप्रैल 1469 ई.	15 अप्रैल 1469 ई.	--	22 सितंबर 1539 ई.	70 वर्ष
2	गुरु अंगद	31 मार्च 1504 ई.	14 जून 1539 ई.	35 वर्ष	29 मार्च 1552 ई.	48 वर्ष
3	गुरु अमरदास	05 मई 1479 ई.	29 मार्च 1552 ई.	73 वर्ष	01 सितंबर 1574 ई.	95 वर्ष
4	गुरु रामदास	09 अक्तुबर 1534 ई.	01 सितम्बर 1574 ई.	40 वर्ष	01 सितंबर 1581 ई.	47 वर्ष
5	गुरु अर्जन देव	15 अप्रैल 1563 ई.	01 सितम्बर 1581 ई.	18 वर्ष	30 मई 1606 ई.	43 वर्ष
6	गुरु हरिगोविंद	19 जून 1595 ई.	30 मई 1606 ई.	11 वर्ष	03 मार्च 1644 ई.	49 वर्ष
7	गुरु हरि राय	16 जनवरी 1630 ई.	03 मार्च 1644 ई.	14 वर्ष	06 अक्टूबर 1661 ई.	31 वर्ष
8	गुरु हरिकृष्ण	07 जुलाई 1656 ई.	06 अक्टूबर 1661 ई.	05 वर्ष	30 मार्च 1664 ई.	08 वर्ष
9	गुरु तेगबहादुर	01 अप्रैल 1621 ई.	20 मार्च 1665 ई.	44 वर्ष	11 नवंबर 1675 ई.	54 वर्ष
10	गुरु गोविंद सिंह	22 दिसंबर 1666 ई.	11 नवंबर 1675ई.	09 वर्ष	07 अक्टूबर 1708 ई.	42 वर्ष
11	गुरु ग्रंथ साहिब	01 सितंबर 1604 ई.	06 अक्टूबर 1708 ई.	--	अनंतकाल	अनंतकाल

क्र.सं.	गुरु के नाम	पिता का नाम	माता का नाम	धर्मपत्नी का नाम	पुत्र का नाम	पुत्री का नाम
1	गुरु नानक देव	मेहता कल्याणचंद बेदीजी	माता तृप्ता जी	बीबी सुलक्खनी जी	श्रीचंद, लख्मीचंद	X
2	गुरु अंगद	बाबा फेरुमल जी	माता रामो जी	बीबी खीवी जी	श्री दासूजी, श्री दातूजी	बीबी अमरो, बीबी अनोखी
3	गुरु अमरदास	तेज भान भल्लाजी	माता सुलक्खनी जी	बीबी मनसा देवी जी	बाबा मोहन जी, बाबा मोहरीजी	बीबी दानीजी, बीबी भानीजी
4	गुरु रामदास	बाबा हरिदासजी	माता दया कौर जी	बीबी भानीजी	प्रिथीचंदजी, महादेवजी, अर्जनदेव जी	X
5	गुरु अर्जन देव	गुरु रामदासजी	माता भानीजी	बीबी गंगा जी	हरगोविंद जी	X
6	गुरु हरिगोविंद	गुरु अर्जनदेवजी	माता गंगा जी	बीबी नानकीजी बीबी महादेवीजी बीबी दामोदरी जी	बाबा गुरुदित्ता, बाबा सूरजमल, बाबा अनी राय, बाबा अटल राय, तेग बहादुर जी	बीबी वीरो जी
7	गुरु हरि राय	बाबा गुरुदित्ता जी	माता निहाल कौर जी	बीबी कृष्णाकौर जी	रामराय जी, हरिकृष्णजी	X
8	गुरु हरिकृष्ण	गुरु हर राय जी	माता कृष्णा कौर जी	अविवाहित	X	X
9	गुरु तेगबहादुर	गुरु हरगोविंद जी	माता नानकी जी	बीबी गुजरी	गोविंद सिंहजी	X
10	गुरु गोविंद सिंह	गुरु तेग बहादुर जी	माता गुजरी जी	बीबी जीतोजी बीबी सुंदरीजी बीबी साहिब दीवानजी	अजीत सिंह, जोरावर सिंह, जूझार सिंह, फतेह सिंह	X
11	गुरु ग्रंथ साहिब					

1. गुरु नानक देव (1469-1539)

सिख-पन्थ के प्रवर्तक गुरु नानक देव का जन्म 15 अप्रैल, 1469 ई. (वैशाख शुक्ला तृतीया, संवत् 1526) को पंजाब में रायभोंटा के तलवण्डी नामक

स्थान पर हुआ था. यह स्थान अब ननकाना साहब के नाम से जाना जाता है तथा पाकिस्तान के शेखूपुरा जिले में लाहौर से 40 मील की दूरी पर स्थित है. यद्यपि उनका जन्म वास्तव में वैशाख मास में हुआ था, तथापि बाला सन्धू की जन्म-साखी की परम्परा के आधार पर गुरु नानकदेव की जयन्ती कार्तिक पूर्णिमा को ही मनायी जाती है. उनके पिता का पूरा नाम मेहता कल्याणचन्द्र बेदी था, जो 'कालू मेहता' के नाम से अधिक जाने जाते थे. उनकी माता का नाम तृप्ताजी था. नानकी इनकी बड़ी बहन थीं, जिनका विवाह सुल्तानपुर लोधी के सरकारी कर्मचारी जयराम से हुआ था.

नानक बचपन से ही विरक्त व एकान्तप्रिय थे. पिता ने पुत्र की विरक्ति दूर करने के लिए अनेक उपाय किये, किन्तु सफलता नहीं मिली. तब 1485 ई. में नानक का जिला गुरदासपुर के वासी मूला (मूलचन्द चोना) की कन्या सुलक्खनी से कराया गया. विवाह के तीन वर्ष बाद उनकी पत्नी सुलक्खनी नानक के साथ रहने लगीं. नानक के दो पुत्र हुए- श्रीचन्द्र और लखमीचन्द्र.

यह पारिवारिक बन्धन भी विरक्त नानक को माया की डोर से बाँधने में सक्षम नहीं हुआ. पिता कालूचन्द मेहता पुत्र की इस विरक्त प्रवृत्ति के सदा दु:खी रहते. एक दिन अपने जामाता जयराम को बुलाकर उन्होंने नानक के लिए सुल्तानपुर लोधी में कहीं नौकरी का प्रबन्ध करने को कहा. जयराम नानक को साथ लेते गये और सुल्तानपुर लोधी में ही गवर्नर दौलत खाँ के सरकारी अनाज-गोदाम में भण्डारी की नौकरी दिलवा दी. यह सुल्तानपुर लोधी पंजाब के कपूरथला जिले में स्थित है.

सुल्तानपुर में नानक की आध्यात्मिक साधना भी चलती रही. इसी बीच उन्हें एक दिन दिव्यज्ञान की प्राप्ति हुई. जब वे प्रतिदिन की भाँति एक दिन पास की नदी में स्नान कर रहे थे, तब वे तल्लीनावस्था (समाधि की अवस्था) में चले गये और इस स्थिति में वे तीन दिन और तीन रात तक रहे. लोगों ने समझा कि नानक डूब गये, किन्तु उनकी बहन नानकी ने बड़े आत्मविश्वास भरे शब्दों में कहा कि मेरा भाई जगत् को उबारने आया है, वह कभी डूब नहीं सकता. चौथे दिन प्रात: नानक नदी से निकले. इस बीच, उन्हें ब्रह्म का सान्निध्य हुआ. उन्हें दिव्य वाणी सुनाई दी- ''नानक मैं तेरे साथ हूँ. तुम्हारे माध्यम से मेरे नाम का प्रचार-प्रसार होगा. जो कोई तेरा अनुसरण करेगा, मैं उसकी रक्षा करूँगा. तुम जगत् में जाओ, प्रार्थना करो और दूसरों से भी कराओ. तुम्हारा जीवन नाम, दान, स्नान, सेवा और सुमरन में लगे. यह तुम्हारे जीवन का ध्येय हो. नानक! मैं तुझे यह आशीर्वाद देता हूँ.''

नानक ने प्रभु का गुणगान किया. प्रभु ने उन्हें अमृत का पान कराया और गुरु की उपाधि प्रदान की. नदी से निकलकर नानक अपने घर गये और अपने पहनावे की धोती के सिवाय सब कुछ दान में दे दिया. नदी में डूबे हुए व्यक्ति के चौथे दिन सुरक्षित निकल आने पर सब विस्मित थे. नानक से अनेक प्रश्न किये जाने लगे, किन्तु नानक मौन धारण किये रहे.

नानक लोगों से पिण्ड छुड़ाकर साधुओं के बीच पहुँचे. वहाँ उनके सत्संगी साथी मरदानी भी थे. मिलकर कीर्तन किया. दूसरे दिन नानकदेव जब जगे, तब उन्होंने उद्घोष किया- 'न कोई हिन्दू है न मुसलमान'. यह घोषणा वे अपने जीवन में बार-बार करते रहे. उनकी दृष्टि में न कोई हिन्दू है न मुसलमान; सब ईश्वर से बन्दे हैं; विभाजक रेखाएँ तो इन्सानों की बनायी हुई हैं.

गुरु नानक देव ने चार बड़ी उदासियाँ (यात्राएँ) की. उन्होंने पहली उदासी पूर्व में सन् 1497-1508 ई. तक की. दूसरी उदासी दक्षिण में सन् 1510-1515ई.